अजीम प्रेमजी

मानवसेवी उद्योगपति

"एक सामान्य मनुष्य में असामान्य कार्य करने की अपार क्षमता होती है। जरूरत है बड़ी सोच रखने की।'' यह मूलमंत्र है, विप्रो के अध्यक्ष अजीम प्रेमजी का। इस मूलमंत्र को अपनाकर उन्होंने अपने जीवन में सफलता की अनगिनत सीढ़ियाँ चढ़ने में कामयाबी हासिल की।

अजीम प्रेमजी

अजीम प्रेमजी का पूरा नाम अजीम हशम प्रेमजी है। उनके पिता का नाम एम.एच. हशम प्रेमजी था। वह एक संपन्न उद्योगपति के परिवार से थे। उनके दादा बर्मा के प्रख्यात चावल व्यापारी थे।

अपनी पत्नी यासमीन के साथ प्रेमजी

अजीम का जन्म 24 जुलाई, 1945 को मुंबई में हुआ था। उनके पिता गुजराती खोजा इस्माइली शिया मुसलिम परिवार से थे। वह मुंबई में अव्वल दर्जे के चावल व्यापारी और कमीशन एजेंट थे। 1945 में उन्होंने पश्चिम भारत वनस्पति उत्पादन कंपनी शुरू की, जो बाद में विप्रो लिमिटेड कहलाई। कंपनी हाइड्रोजन मिश्रित वनस्पति तेल और घी बनाती थी। 1944 में मोहम्मद अली जिन्ना ने हशम प्रेमजी को मुसलिम लीग में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। हालाँकि व्यक्तिगत और व्यावसायिक कारणों से उन्होंने इसे नकार दिया। जिन्ना ने उन्हें फिर आमंत्रित किया और इस बार पाकिस्तान के प्रथम मंत्रिमंडल में वित्त मंत्री के पद के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने पाकिस्तान जाने से मना कर दिया और भारत में ही रहने का निश्चय किया।

अजीम ने मझगाँव, मुंबई के संत मैरीज स्कूल से आई.सी.एस.ई. पास किया। उन्होंने शुरुआती पढ़ाई संत मैरीज से की और बाद में पढ़ाई के लिए अमेरिका के स्टैंडफोर्ड

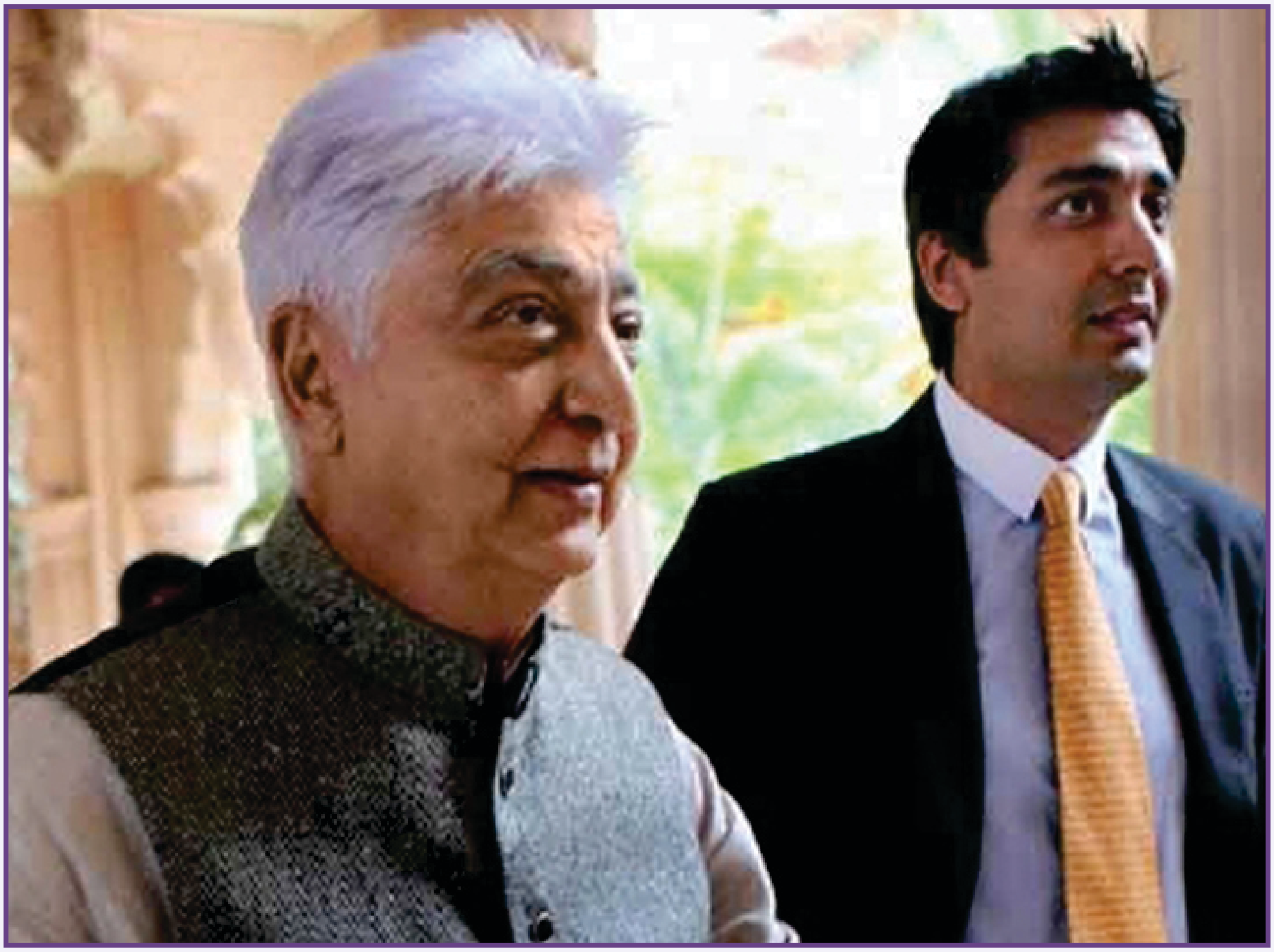

बड़े सुपुत्र रिशाद प्रेमजी के साथ

यूनिवर्सिटी, कैलिफोर्निया में दाखिला लिया। उन्होंने वहाँ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की। अचानक उनके पिता का देहांत हो गया और अंडर ग्रैजुएट की पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। उन पर पिता की कंपनी को सँभालने के लिए परिवार की ओर से दबाव पड़ने लगा। इस तरह 1966 में जब वह 21 साल के थे, तभी उन्होंने पारिवारिक बिजनेस को सँभाल लिया।

शेयर धारकों ने पहली जनरल मीटिंग में उनकी कम उम्र को लेकर, उनके पिता के 20 लाख डॉलर के बिजनेस को सँभाल पाने पर संदेह व्यक्त किया और उनके सभी शेयरों को बेच देने की सलाह दी। उनका विचार था कि कंपनी का प्रबंधन किसी

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ

सशक्त हाथ में सौंप देना चाहिए। लेकिन इस सलाह को दरकिनार करते हुए अजीम प्रेमजी ने अपने पिता द्वारा छोड़ी हुई कंपनी को सफल बनाने का संकल्प लिया। वह इसे सफल बनाने के लिए दृढ़ विश्वास के साथ जुट गए। उनका विश्वास था कि वह इस कंपनी को मजबूत बनाकर ही दम लेंगे।

अब उनकी इंजीनियरिंग की पढ़ाई छूट चुकी थी। उन्होंने पत्राचार से पढ़ाई करने की अनुमति ले ली और फिर इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक की डिग्री हासिल की। यह डिग्री उन्होंने काफी दिनों बाद 30 साल की उम्र में प्राप्त की।

यह उनकी उस सोच को व्यक्त करता है कि लक्ष्य को पाने के लिए उनका इरादा कितना मजबूत था। अपने पिता की मृत्यु के बाद जब अजीम प्रेमजी ने जिम्मेदारी सँभाली उस समय कंपनी में मात्र हाइड्रोजन मिश्रित रसोई तेल और घी का बिजनेस था। बाद में उसी बिजनेस पर टिके रहना उन्हें पसंद नहीं आया। उन्होंने अपने बिजनेस को

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील से पद्मविभूषण सम्मान प्राप्त करते हुए

बेकरी फैट, साज-श्रृंगार के सामान और बच्चों के साबुन आदि बनाने के रूप में विकसित किया। बाद में उन्होंने पूरी तरह से अन्य क्षेत्र में बिजनेस को आगे बढ़ाया। इसके लिए वह पूरी तरह से जुट गए। बिजली कंपनी की साझेदारी में उन्होंने लाइट बल्ब बनाने की कंपनी शुरू की। बाद में इस कंपनी ने अपना दायरा बढ़ाया और अन्य

भारतीय उद्योग जगत् की प्रमुख हस्तियाँ, (बाएँ से, बैठे हुए)—अजीम प्रेमजी, इंदिरा नूयी, दीपक पारेख, (बाएँ से, खड़े हुए)—सुनील मित्तल, हरीश मनवानी, कुमार मंगलम बिड़ला, पीटर सैंड्स व अंशु जैन

उपभोक्ता उत्पादों, जैसे साबुन, बच्चों के लिए उपयोगी सामान, शैंपू, पाउडर आदि का उत्पादन शुरू किया। विप्रो ने कुछ ही दिनों बाद हाइड्रोलिक सिलिंडर और ट्रक का सामान बनाना शुरू किया। प्रेमजी बड़े महत्त्वाकांक्षी थे। उन्होंने अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुए कंप्यूटर हार्डवेयर के क्षेत्र में प्रवेश किया। जल्द ही उन्होंने सूचना तकनीकी (आई.टी.) के क्षेत्र में कदम रखा। अब विप्रो सॉफ्टवेयर विकसित करने, मेडिकल सिस्टम, तकनीकी से जुड़े साधन और कार्यालयों में उपयोग किया जाने वाला सामान बनाने लगी।

सिर्फ खाद्य तेल और घी तैयार करने वाली कंपनी को अजीम प्रेमजी ने सॉफ्टवेयर

मिशन 10X के शुभारंभ के अवसर पर iACT टीम के साथ प्रेमजी

टेक्नोलॉजी के रूप में बदल दिया, जो आज के समय की जरूरत है। जमाने की बढ़ती माँग से कदमताल मिलाते हुए प्रेमजी ने अपनी कंपनी को उस ऊँचाई पर पहुँचाया कि आज इसका अपना नाम है। आज यह कंपनी दुनिया की सबसे बड़ी अनुसंधान और विकास (आर ऐंड डी) से जुड़ी सेवा प्रदान करने वाली कंपनी बन चुकी है। आर ऐंड डी सेवा से जुड़ने से पहले यह कंपनी दुनिया की सबसे बड़ी आई.टी. सेवा उपलब्ध कराने वाली कंपनी बनी। उसके बाद प्रोडक्ट इंजीनियरिंग सर्विस (पी.ई.एस.) से कंपनी जुड़ गई। कंपनी ने बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बी.पी.ओ.) भी शुरू किया, जिसमें तीसरी पार्टी के लिए ऑफिस तैयार करना, अकाउंटिंग और मानव संसाधन की प्रक्रिया की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

फैराडे मैडल को प्रदर्शित करते प्रेमजी

प्रेमजी के मन में एक नई कंपनी बनाने का विचार आया, जिसमें उन्होंने तेल और साबुन के बिजनेस को आई.टी. में बदल दिया और सॉफ्टवेयर कंपनी पर सारा ध्यान केंद्रित किया। उन्हें 2 मिलियन (20 लाख) डॉलर वाली कंपनी मिली थी, उन्होंने इसे अरबों डॉलर में बदल दिया।

वह जो चाहते थे, उसे हासिल कर लेते थे। वह हमेशा नए क्षेत्र में कामयाबी हासिल करने का लक्ष्य साधते। प्रेमजी की इस कामयाबी का असर कभी उनके स्वभाव पर नहीं पड़ा। वह एक सहज इनसान हैं, उनमें कोई बनावटीपन नहीं है। वास्तव में वह शर्मीले स्वभाव के हैं। उनके काम ही उनकी बातों को इजहार करते हैं। उनकी कोई भी सफलता उनके स्वभाव को नहीं बदल पाई। उनकी कंपनी अरबों डॉलर की हो गई है और वह दुनिया के अमीर लोगों में से एक हैं, फिर भी वह सामान्य लोगों की तरह किफायती श्रेणी में यात्रा करते हैं। यहाँ तक कि पाँच सितारा होटलों में ठहरने के बजाय वह गेस्ट हाउस में ठहरना ज्यादा पसंद करते हैं।

लोग उनका रहन-सहन देखकर कहते हैं कि उनका सादा जीवन उच्च विचार है।

इस महामानव के बारे में कहा जाता है कि पहुँच से बाहर अगर कोई बहुकीमती चीज भी हो तो वह उसका खयाल त्याग देते हैं। वह भारत की बनी चीजों को पसंद करते हैं। उनके कपड़े, उनकी घड़ी, कार, सभी भारत की बनी हुई होती हैं। वह खुद को अपने बिजनेस की तुलना में अपनी कंपनी और भारत की व्यावसायिक परिस्थितियों को ज्यादा महत्त्व देते हैं। उनका ध्यान हमेशा कंपनी के विस्तार पर लगा रहता है। वह कर्मचारियों की भलाई पर ध्यान देते हैं। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें एक सामान्य मनुष्य से अलग बना दिया।

आई.टी. के प्रति प्रेमजी का लगाव बड़ा मजबूत है। 1980 में जब आई.बी.एम. कंपनी ने भारत छोड़ा, अजीम प्रेमजी ने इस स्वर्णिम अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया और कंप्यूटर बिजनेस में प्रवेश किया। कंप्यूटर बिजनेस से जुड़ने वाले वह पहले

विप्रो के प्रमुख सहयोगियों गिरीश परांजपे (बाएँ) व सुरेश वासवानी (दाएँ) के साथ

जी ई ग्रुप के प्रमुख जेफ्रे आर इमलेट के साथ प्रेमजी

भारतीय बिजनेसमैन हैं। कंप्यूटर बनाने के लिए उन्होंने अच्छे-अच्छे इंजीनियरों को अपनी कंपनी में नियुक्त किया। वह जानते थे कि आई.टी. की दुनिया में नकल नहीं, बल्कि आधारभूत ज्ञान का मजबूत होना जरूरी है। इसे ध्यान में रखते हुए वह आई.टी. की दुनिया की होड़ में शामिल हो गए और किसी दूसरे से पहले मंजिल की ऊपरी सीढ़ी पर पहुँच गए। उनकी कंपनी ने दुनिया में नई पहचान कायम की। मनुष्य के जीवन में सूचना तकनीकी के महत्त्व को समझते हुए उन्होंने इसके हर क्षेत्र में कदम रखा। वह जानते थे कि किसी को जीवन में अगर सफल होना है और किसी स्थिति में मुँह की नहीं खानी पड़े, ऐसी सोच रखनी है तो उसे वर्तमान तकनीकी से पूरी तरह वाकिफ होना

बेंगलुरु में 'जलेबी मैनेजमेंट' का विमोचन करते प्रेमजी

होगा। वर्तमान युग तकनीकी और विज्ञान का है। दुनिया के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलने वाले समाज को इसे स्वीकार करना पड़ेगा। इसलिए वह हमेशा आई.टी. के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहे। वह जानते हैं कि भारतीय इस क्षेत्र में काफी अच्छे हैं और आई.टी. व्यवसाय के क्षेत्र में वे अपना रास्ता निकाल लेंगे।

बेंगलुरु में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में उन्होंने कहा था कि धनोपार्जन के लिए दुनिया में आई.टी. का विशेष योगदान है। उनके अनुसार, भारत वह देश है, जिसने आई.टी. क्षेत्र में न सिर्फ कदम रखा है, बल्कि इसका नेतृत्व करने लगा है। भारतीयों ने पूरी दुनिया में आई.टी. में अपनी विशेष पहचान बनाई है। अपने इन्हीं योगदानों के

पं. बंगाल के वित्त मंत्री श्री अमित मित्रा के साथ प्रेमजी

कारण भारतीयों ने इस क्षेत्र में सफल उद्योगपति होने का भी गौरव प्राप्त किया है।

उनकी कंपनी भारत के पाँच प्रख्यात बिजनेस स्कूलों से युवाओं को नियुक्त करती है। वे भारतीय प्रबंधन संस्थानों से एम.बी.ए. करने वालों की भरती करते हैं। उनकी नियुक्ति के बाद उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है। उनकी कंपनी उन कंपनियों से भी कर्मचारियों को रखती है, जो बड़ी और सफल कंपनियों में कार्यरत हैं। इसके अलावा उनकी कंपनी बाहर के स्टूडेंट्स को भी नियुक्त करती है, जो विप्रो के साथ काम करने के योग्य होते हैं। यह बहाली उनके द्वारा तय की गई प्रक्रियाओं के आधार पर होती है। जो व्यक्ति सभी परिस्थितियों में काम करने योग्य हो, किसी चीज को तुरंत ग्रहण कर सकता हो, विषम परिस्थितियों में भी सामान्य रहते हुए काम कर सकता हो, उसे ही उनकी कंपनी में काम करने का मौका दिया जाता है। खासकर निश्चित समय में व्यवस्थित रूप से लक्ष्य को पूरा करने वाले व्यक्ति को उनकी कंपनी में प्राथमिकता दी जाती है।

बेंगलुरु के पूर्व मुख्यमंत्री श्री येदियुरप्पा के साथ प्रेमजी

प्रेमजी की सफलता और उनके ऊँचाई पर पहुँचने का आधार उनका ज्ञान, दूरदर्शिता और दृढ़ता व सुरक्षापूर्वक किसी योजना को अंजाम देना हो सकता है, लेकिन इसके बदले किसी को रिश्वत नहीं दे सकते। वह खुद कठिन परिश्रमी थे। वह विश्वास रखते हैं कि प्रतिस्पर्धा की इस दुनिया में जो सफल होना चाहता है, उसे काम पर ही जीना होगा।

वह एक अनुशासन प्रिय मालिक हैं, जो अपने कर्मचारियों से उच्च स्तरीय प्रतियोगी और ईमानदार होने की अपेक्षा रखते हैं। झूठे और धोखेबाजों के लिए उनके यहाँ कोई स्थान नहीं है। वह सिद्धांतवादी मनुष्य हैं। वह किसी गलती को आसानी से भूलते नहीं। जब वह अपनी कंपनी में महाप्रबंधक थे, उस समय की घटना है—गलत बिल बनाने के कारण एक अधिकारी को उन्होंने कंपनी से निकाल दिया, जबकि कंपनी में उसका विशेष योगदान था। यह प्रेमजी की कंपनी के लिए बड़ा झटका था, फिर भी उन्होंने नहीं

एक दीक्षांत समारोह में प्रेमजी

डेटाक्वेस्ट लाइफटाइम एचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते हुए प्रेमजी

माना। प्रेमजी का कहना था, यह मुद्दा उनके सिद्धांतों का था और वह कभी इससे समझौता नहीं कर सकते। उन्होंने अपने कर्मचारियों के लिए एक नियम बनाया है—कोई ऐसा काम न करे, जिसकी वजह से मीडिया में दूसरे दिन उनकी तसवीर आ जाए। इसे हर हाल में मानना है और जो इसका पालन नहीं करते हैं, उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है।

अजीम प्रेमजी ने 1984 में इक्विटी रिवार्ड ट्रस्ट की स्थापना की। इसमें कंपनी के कर्मचारियों को अपना शेयर खरीदने की छूट दी गई। दुर्घटना, सेवानिवृत्ति या फिर अक्षमता होने पर कर्मचारी के शेयर को उसे खरीदने वाले अथवा आश्रितों के नाम ट्रांसफर कर दिया जाता है। दुर्घटना के 90 दिनों के अंदर इसे तय करना होता है।

प्रेमजी एक पारिवारिक व्यक्ति हैं। उनके परिवार में उनकी पत्नी यासमीन और दो बच्चे रिशाद तथा तारिक हैं। रिशाद अमेरिका में जीई के लिए काम करते हैं। उनकी शादी अदिति के साथ हुई है। उनके दूसरे बेटे तारिक ने कॉडॉटकॉम की स्थापना की और बेंगलुरु से काम शुरू किया।

अजीम प्रेमजी के दो शौक हैं—भ्रमण करना और पढ़ना। परोपकार करके वह आत्मिक शांति महसूस करते हैं। बच्चों की पढ़ाई के लिए उन्होंने 'अजीम प्रेमजी फाउंडेशन' की स्थापना की। यह बिना लाभ वाला संगठन है। इस संगठन का उद्देश्य बच्चों को प्राथमिक शिक्षा देकर उन्हें ऊपर उठाना, समानता का भाव पैदा करना और

योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री मोंटेक सिंह आहलूवालिया व अन्य प्रमुख लोगों के साथ प्रेमजी

उन बच्चों को समाज में सम्मानपूर्वक जीने की कला सिखाना है। इस संगठन की स्थापना 2001 में हुई, यह देश में 13 राज्यों में चल रहा है। वह ऐसे उद्योगपति हैं, जो जन कल्याण में विश्वास रखते हैं। उनका कहना है कि उन्होंने अपने बेटों को अपनी संपत्ति का थोड़ा ही हिस्सा दिया है, लेकिन वह उनके लिए पर्याप्त है। इसलिए वह बिल गेट्स की तरह जीवनपर्यंत अपने पैसे को साथ रखना चाहते हैं।

प्रेमजी को कई सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। बिजनेस वीक ने उन्हें 'महान् उद्योगपति' की उपाधि दी है। उच्च शिक्षा के लिए मशहूर मणिपाल यूनिवर्सिटी ने उन्हें वर्ष 2000 में डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की। भारत सरकार ने

कंप्यूटर क्षेत्र की प्रमुख कंपनी इंफोसिस के प्रमुख श्री एन.आर. नारायण मूर्ति के साथ प्रेमजी

वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र उनकी शानदार उपलब्धि के लिए उन्हें 2005 में 'पद्‌म भूषण' सम्मान प्रदान किया। 2006 में नेशनल इंस्टीट्‌यूट ऑफ इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग, मुंबई ने उन्हें 'लक्ष्य बिजनेस विजनरी' का सम्मान प्रदान किया। अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय ने 2008 में अजीम प्रेमजी को साहित्य में डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की। वेसलियान यूनिवर्सिटी, मिडल टाउन कनेक्टिकट ने उनके मानव कल्याण के कामों के लिए 2009 में डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की। एक्स.एल.आर.आई. जमशेदपुर ने उन्हें औद्योगिक और सामाजिक शांति के लिए 'सर जहाँगीर गांधी' मेडल प्रदान किया। यहाँ तक कि भारत सरकार ने प्रेमजी को 2011 में 'पद्‌म विभूषण' से भी सम्मानित किया। किसी भारतीय नागरिक को दिया जाने वाला यह दूसरा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है।

'राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार' प्राप्त करते हुए प्रेमजी